नं. – ५००२

नाम शाल्म मन्त्र राज

कर्ता × × ×

पत्रसं ४ —— स ×

विषय तन्त्रम्

प्रारभमंत्रराजः

५००२

5002

श्रीगणेशायनमः ॥ ॐ अस्य श्रीशरभसाल्वपक्षिराजहृदिवनाशिंशात्दरीमेवराज महामन्त्रस्य का
लाग्निरुद्रऋषिः ॥ जगतीछंदः । श्रीशरभसारभेश्वरोदेवता खेंबीजं ॥ स्वाहाशक्तिः । फट्कीलकं
श्रीशरभसारभेश्वरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ खें खें खें फट् तर्ज
नीभ्यां स्वाहा ॥ प्राणग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट् मध्यमाभ्यां वषट् ॥ सर्वशत्रुसंहारणाय अनामि
काभ्यां हुं शरभसाल्वपक्षिराजाय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् हुं फट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां
फट् ॥ एवं हृदयादिन्यासः ॥ अथ ध्यानं ॥ चन्द्रार्कौ वह्निदृष्टी कुलिशवरनखश्चंचलात्युग्रजिह्वा
काली दुर्गा च पक्षौ हृदयजठरगो भैरवो वाडवाग्नि ॥ ऊरुस्थौ मारिमृत्युपक्रौ विकटखुरवरश्चण्ड
वातातिवेगः ॥ संहर्ता सर्वशत्रून् जयति शरभः साल्वपक्षिराजः ॥ ध्यानेन सारभं ध्यात्वा प्र
णम्य पक्षिनृपतिं ॥ अष्टोत्तरसहस्राणि शत्रूणां फलनाशनः ॥ २ ॥ मानसैः सहस्रपुष्पैः सदर्पाये
ने ॥ त्रिशूलमुद्रायै नमः ॥ कपालमुद्रायै नमः ॥ खड्गमुद्रायै नमः ॥ खेटकमुद्रायै नमः ॥ चक्रमुद्राय
नमः ॥ अथ मन्त्रः ॥ ॐ ह्रीं खें खें खें फट् प्राणग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ

मालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ॥ मन्त्रादिना जपसमर्पणं ॥ अस्य श्रीशरभसालुवपक्षिराजम-
हाविंशत्यक्षरमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः ॥ बृहतीछन्दः ॥ षट्त्रिंशाटवरः श्रीशरभेश्वरो देवता ॥ खे
बीजे ॥ स्वाहा शक्तिः फट् कीलकं मम षडूविंशा ॥ विनियोगः ॥ खेत्यादि षडंगन्यासः ॥ ध्या-
ने ॥ स्वर्णाभश्चिर्धपाशीर्षेण च पक्षाभ्यां चंचुनासिकः अधोवक्त्रश्चतुष्पादूर्ध्ववक्त्रश्चतुर्भुजो ॥ काला-
नलदहनोपमो नीलजीमूतनिस्वनः ॥ विभुस्तद्दर्शनादेव विनष्टबलविक्रमः ॥ २ छ दाहदोग्रनूपाव
पक्षिर्विविक्षिप्त भ्रमन्तो ॥ अष्टपादाय रुद्राय नमः शरभमूर्तये ॥ ३ ॥ वंशमाकोऽव ॥ इति ध्यात्वा ॥ मान-
त्रि से: संपूज्य पुष्पलादिभिः यन्त्रदर्शयेत ॥ मन्त्रः ॥ ॐ खें खें घं घं हुं फट् ग्रीं ग्रें ग्रीं ग्रुं सर्वग्रहान्त्सेदारणा-
य शरभसालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ॥ १९ ॥ ॐ अस्य श्री अघोरशरभसालुवपक्षिराजमा-
लामन्त्रस्य ॥ ईशान ऋषिः ॥ अनुष्टुप्छन्दः ॥ श्रीशरभसालुवपक्षिराजवीरभद्रो देवता ॥ ह्रां बीजं ह्रीं
शक्तिः ॥ हूं कीलकं ॥ मम सकलोपद्रवनिवारणार्थे ॥ अघोरशरभसालुवपक्षिराजवीरभद्र-
मालामन्त्रजपे विनियोगः ॥ हृदि ध्यायेत् कृष्णवर्णं नागाभरणभूषितं ॥ दंष्ट्राकरालवदनं द-

शतेशं दं रुं मं ठिनो ॥ ॥ नमस्तहाटकसंकाशं जटामुकुटशोभितं ॥ चिंतयेद्भूतवेतालेश्वरहापस्मारशोन
ये ॥ १ ॥ पंचोपचारपूजा ॥ ऐं श्रं ह्रां ठं नमो भगवते शरभसालुवपक्षिराजाय प्रद्योरशरभाय आका
शगमनाय ब्रह्मविष्णुरुद्रलाय प्रद्यो प्रद्योरुद्राय पडमखडहलाय नरसिंहगर्वनिर्धूनाय समस्तदेवता
विद्रावितसेविताय सर्वगणनाथाय घभक्तजनेनरहकाकरेणाय ॥ वज्रपञ्जरवज्रदेहाय कुलसर्पय
नोपवीताय ह्रां ह्रीं हूं समस्तग्रहान् आकर्षय ॥ १ ॥ आवेशय ॥ १ ॥ शिरःकंपय ॥ १ ॥ मर्दय ॥ १ ॥ भीषय
२ रोदय रोदय ॥ १ ॥ त्रिंशत्कोटिपिशाचान् नवकोटिगंधर्वान् आकर्षय ॥ १ ॥ दशकोटिमहलीला
न् आकर्षय ॥ १ ॥ नवकोटिदुर्गान् आकर्षय ॥ १ ॥ अष्टकोटिभैरवान् आकर्षय ॥ १ ॥ सप्तकोटिमा
तृगणान् आकर्षय ॥ षट्कोटिभूतान् आकर्षय ॥ १ ॥ चतुष्कोटिब्रह्मराक्षसान् आकर्षय ॥ १ ॥ त्रि
शत्कोटिगणनाथान् आकर्षय ॥ १ ॥ द्विकोटिवेतालान् आकर्षय ॥ १ ॥ आवेशय ॥ १ ॥ भीषय २ त्रा
सय ॥ १ ॥ वं वं अं अं आकर्षय २ पं पं पं पं आवेशय ॥ १ ॥ लं लं लं लं स्तंभय ॥ १ ॥ रं रं रं रं संहारय २ ॐ न
मो भगवते प्रद्योरशरभाय शरभसालुवपक्षिराजाय भस्मोद्धूलितविग्रहाय सदारुद्राय नमाला
पंचाकोटिपद्मीनः आआकर्षय ८

ग

धराय श्रीशरभगिरिराय आकाशगमनाय रत्नपतनकोलाहलाय कलीलीलीकलीलीलीलीआ
२ काशभैरवाय कलीली २ ललललललललललन्तसिंहगर्वविध्वंसनाय कलीलीली २ ललललल
ललल ॥ अघोरवीरभद्राट्टहासाय कलीलीली २ ललल ॥ पन्नगेन्द्रय २ ॥ उन्मादग्रहोच्चाटनाय २ ॥ गोग्रग्र
हाच्चाटनाय ॥ २ ॥ ज्वालग्रहोच्चाटनाय ॥ २ ॥ स्त्रीग्रहोच्चाटनाय ॥ २ ॥ उरुषग्रहान् बंधय ॥ २ पाषग्रहान् बंधयबं
धय शंकरीत्नग्रहान् बंधय ॥ २ ॥ जलग्रहान् बंधय ॥ २ ॥ स्थलग्रहान् बंधय ॥ २ ॥ क्रों क्रों क्रों आक
र्षय ॥ २ ॥ क्रौं क्रौं क्रौं आवेशाय ॥ २ ॥ ह्रैं ह्रैं ह्रैं भुंचय ॥ २ ॥ प्रों प्रों प्रों टाहय ॥ २ ॥ मेघवर्णत्रिनेत्रयोन्नावृ
चपु योपवीं ठं ठं ठं ठं मट मट मट मे ॥ ॐ नमो भगवते आकाशवीरभद्राय श्रीशरभशालुवपक्षि
राजाय खं खं खं खं खरभूचर खेचर खट पट खट पट खट पट उंहुं शरभाय ओं महामेरुपीठासना
य भक्तजनवत्सलाय करुणाय सदा रुद्रा हामालाधारय मम भागगराग पंचाननरोमअपरिष्टुंणाय आ
दिशरभेश्वराय मारचारिन ॥ मम पापं नभवतय ॥ २ ॥ मम कार्यं सिद्धय ॥ २ ॥ मम सर्वग्रहान् बंधय
२ स्वकर्म परिपालनाय ॥ २ ॥ स्वमंत्र स्वतंत्र सहस्रकोटीः कोटिपरिपालनाय जलग्रहान् बंधय २

स्थलग्रहानवंधय ॥ वायुग्रहान्‌वन्धय ॥ अग्निग्रहान्‌वंधय ॥ समस्तसूत्रेन आकर्षय ॥ सम
स्तश्रेनाग्रहान आकर्षय ॥ समस्तपिशाचग्रहान आकर्षय ॥ स्तंभय ॥ उच्चाटय ॥ कामिनीग्रहान
आकर्षय ॥ सिद्धग्रहान आकर्षय ॥ साध्यग्रहान आकर्षय ॥ किन्नरग्रहान आकर्षय ॥ व्याधिग्रहा
न आकर्षय ॥ उन्मग्रहान आकर्षय ॥ पदग्रहान आकर्षय ॥ ममशत्रून विध्वंसय ॥ भिंधि ॥
शूलेन विदारय ॥ ममशत्रून्‌ पाशेन क्रोधय ॥ समस्तभूतलोकान्‌ तापकाय ॥ अखिलब्रह्माण्डना
यकाय ॥ सर्वजनरंजकाय ॥ सहस्रहस्तमालाधराय ॥ पंचवक्त्रनीमनपरिस्फुणीय ॥ आदिभैर
भैरवाय ॥ मोक्षदाय ॥ ममशत्रून्‌ भक्षय ॥ समस्तकार्याणि साधय ॥ ममसर्वग्रहान आकर्षय ॥ ॐ
ऊं ओं ओं ॥ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा ॥ ॐ वें वें वें वें क्रें सोहं हूं फट्‌ सर्वशत्रुसंहारिणे भमालवाय
यहराजाय हूं फट्‌ स्वाहा ॥ ॐ नमः शिवाय महापापभवबन्धच्छेदने भुजपेन ॥ इति भैरवमालास
माप्तः ॥ ॥ गुरुगोरक्षमारीहि तेन लिखिते ॥ ॥ अघोरभैरवमंत्र ॥ वें वें ॐ नमो भगव
ते वीरभद्राय महाबालाय विराजाय दन्ताय धूम्रनाय दन्तशिखरोत्कटनाय श्रीं ह्रौं क्रीं भद्रकाली
ड्गोसमेताय ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्वाम्नायदिशि देवतामारय हूं फट्‌ स्वाहा ॥ वें वें ह

रं आग्नेय्यां दिशि अग्निर्देवता बधयतु मारय दह दह हुं फट् स्वाहा खें खें रुद्राय ९

द्राय ॥ हं याम्यां दिशि यमो देवता मारयतु स्वाहा ॥ खें खें रुद्राय ॥ यं नैरृत्यां दिशि निरृति देवता
२ बधयतु स्वाहा ॥ खें खें रुद्राय वं वरुण्यां दिशि वरुणो देवता बधयतु स्वाहा ॥ खें खें रुद्रा
य यं वायव्यां दिशि वायुर्देवता बधयतु स्वाहा ॥ खें खें रुद्राय ॥ सौं कौवेर्यां दिशि कुवेरो देवता
बधयतु स्वाहा ॥ खें खें रुद्राय ॥ ऐशान्यां दिशि ईशानो देवता बधयतु स्वाहा ॥ खें खें रुद्राय ऊं
ऊर्ध्वायां दिशि ब्रह्मा देवता बधयतु स्वाहा ॥ खें खें रुद्राय अधस्यां दिशि वासुकी देवता बधय-
तु स्वाहा ॥ खें खें रुद्राय क्षौं ग्रीवां नरस्यां दिशि विष्णुर्देवता बधयतु स्वाहा ॥ खें खें रुद्राय
क्षौं मां सर्वान् मा युधं मम परिवारं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा ॥ इति शरभदिग्बंधनं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते विश्व शरीराय पंचमुख भंजनाय शरणार्ति विना
शनाय ॥ उग्राय उग्रदंष्ट्राय ॥ उग्रमांस भक्षणाय ॥ उग्रकोलाहलाय ॥ सकलभुवननिवार
णाय ॥ करधृत कपालमालालंकृत भूषणाय ॥ शार्दूलचर्मवसनाय शरभसालुवाय सूर्य
सोमाग्नि लोचनाय दुर्निवारणाय दुर्वादल श्यामलाय दुरितहराय ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स २
र्वशत्रून् आकर्षय आकर्षय ॥ आं ह्रां क्रों भूत ग्रह पिशाच ग्रह दैत्य ग्रह भीम ग्रह ब्रह्मराक्षस

ग्रह॥ वेतालग्रहं अपस्मारग्रह॥ खेचरग्रह भूचरग्रह कुष्मांडग्रह जलग्रह ज्वालामुखग्रह॥ स्त्री
ग्रह॥ पर्वग्रह पापग्रह पापविक्रमग्रह॥ बालग्रह चातुर्थिकग्रह निमित्तग्रह निमित्ताभिचार
ग्रह॥ सर्वापिवाग्रह यग्रह विचारग्रह॥ निशाचरग्रह स्पद्रोरागग्रह॥ सप्तरात्रग्रह॥ पक्षग्रह मास
ग्रह॥ मंडलग्रह वणमासग्रह वत्सरग्रह अनुभोगग्रह॥ अभिचारग्रह॥ पापग्रह वातग्रह॥ दानव
ग्रह॥ ज्वरग्रह रोगग्रह॥ वेतनग्रह अवेतनग्रह॥ स्फोटकग्रह स्थानग्रह यातिग्रह॥ भ्रान्तिग्रह वि
कारग्रह॥ धिक्कारग्रह॥ संख्यानग्रह सन्निपातग्रह पोषणग्रह धीषणग्रह॥ आदिमग्रह विना
यकग्रह नास्तिकग्रह॥ वैदिकग्रह रागग्रह राजग्रह किक्किटग्रह॥ हठग्रह सात्विकग्रह॥ सर्वसा
त्विकग्रहानावेशयावेशय स्तंभय॥ २ कंपय २॥ सकलपीलान् ज्वालय २॥ सकलपर्वतान् भ्रंश
य॥ २॥ सकलपानीनपातय २ सकलमगगानक्षोभय २॥ सकलनदीः शोषय २॥ सकल
विश्वजयजय मर्दय २ सकलसेनां ध्वंसय २॥ श्रीं ह्रीं क्लीं हुं मोहय २॥ भ्रामय २ भाषय
सकलभूतग्रहान् भाषय २ सर्वपिशाचग्रहान् भाषय २॥ सर्वसात्विकग्रहान् भाषय॥ २

सर्वेमार्वेत्रिंकृयहानभावय ॥२॥ ह्रांह्रींहूंवेधय ॥ गंलुंहुंस्तंभय २॥ स्त्रुंहुंघोटय ॥२॥ दंवेदाहंहंदंदंहं सं
हहय ॥४॥ जुंस्त्राह्रींठंपं जुंसंप्रायय ॥४॥ सर्वेसंहारकारणाय मालवयदितिराजाय चेरुवानाति
व वेगायर्धिंपिंयेंयं संक्रामय ॥२॥ खंवंवंरुंधय ॥२॥ ताडय ॥४॥ घोटय ॥४॥ क्रोशय ॥४॥ क्रोधय ॥४॥ सोंह्रींश्रं
धूय ॥४॥ भद्रकभद्रकालीदुर्गाचंडिनपलहयायदंवंक्रा ॥ ॐ उच्चाटनायोच्चाटनाय फ्रींपरमे
श्रभरहनायजिंकुय ॥२॥ स्फोटय ॥४॥ प्रेंपरमेश्रभेदनायभिंपी ॥४॥ रेरेरेसंहूं परमेश्वविक्षेदनायठं
ठंचैपरविद्याधूमनाय ॥ अनेककालानलभैरवायपीतायरोवस्थितलकाय ॥ ताशय ॥४॥ सवः
भूतयहाग्राशय ॥२॥ सर्वसात्विकयहाग्रापय ॥२॥ [illegible]याय कालरुद्रहृयायसर्वशात्रुनाशय ॥४॥
भवयु ॥४॥ श्रींफ्रींक्रोंक्रूंफट् श्राणगनवत्सललाय सामगानप्रियोपचंडवानातिवंभायश्री
फ्रींक्रोंसर्वसंपत्समृद्धिदायक्रोंश्रींक्लींसंतानसिद्धिप्रदाय ॥ ईंईंसर्वसंमोहनाय ॥४॥ सर्वमायामोव
विवे नायविंविंविंकालभायकेयाज्ञापयाज्ञापय ॥४॥ बंबंसर्वरोगाहराय भूपंजनय ॥४॥ विज्ञानंदायय २
हंहंवामदेवायआत्मानंदर्शय ॥२॥ ॐ खं श्रींह्रींक्रोंग्रदिद्विहिंदेहिमेस्वाहा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ व